प्रकाषनार्थ

पटना, 11 अगस्त। कॉर्नेल विश्वविद्यालय में टाटा कॉर्नेल इंस्टीच्यूट फॉर एग्रीकल्चर एंड फूड न्यूट्रिशन (टीसीआई) और आद्री-स्थित सेंटर फॉर स्टडीज ऑन एनवायरनमेंट एंड क्लाइमेट (सीएसईसी) द्वारा ''बिहार में जीरो-हंगर एंड जीरो-कार्बन फूड सिस्टम'' पर एक परामर्श कार्यशाला का आयोजन आज किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य कृषि क्षेत्र में ग्रीन हाउस गैस (जीएचजी) उत्सर्जन में कमी की रणनीति पर चर्चा थी, जिसकी परिकल्पना एसडीजी लक्ष्य-2, यानी जीरो हंगर और खाद्य सुरक्षा के उपायों पर विमर्ष करना था।

यह परामर्श कार्यषाला उस अध्ययन का हिस्सा था जिसका उद्देश्य बिहार सरकार और यूएनईपी के प्रमुख नीति हितधारकों के साथ काम करना है ताकि खाद्य सुरक्षा-केंद्रित कृषि उत्सर्जन में कमी की रणनीतियों और प्राथमिकताओं को संशोधित स्टेट एक्षन प्लान ऑन क्लाइमेट चेंज (एसएपीसीसी) में लाया जा सके।

कॉर्नेल विश्वविद्यालय, इथाका, यूएसए के प्रख्यात प्रोफेसर डॉ प्रभु पिंगली ने कार्बन को कम करने और जलवायु शमन प्राप्त करने के लिए एक व्यापक तंत्र के लिए मार्ग तैयार करने में खाद्य प्रणाली के राज्य-विशिष्ट विश्लेषण की आवश्यकता प्रस्तुत की। उन्होंने प्रौद्योगिकी, तकनीक और नवाचारों के प्रति किसानों के व्यवहार के साथ-साथ खाद्य मांग के प्रति उपभोक्ता व्यवहार जैसी प्रमुख चुनौतियों पर भी जोर दिया।

आद्री के डॉ प्रभात पी घोष ने प्रमुख आर्थिक और सामाजिक संकेतकों पर प्रकाश डाला जो कि बिहार में भूख के स्तर को प्रभावित कर रहे हैं।े इसलिए राज्य में शून्य कार्बन खाद्य प्रणाली को प्राप्त करने के लिए खाद्य उत्पादन प्रणाली की दिशा में गंभीर कार्रवाई की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि कृषि क्षेत्र में 5 प्रतिषत की वृद्धि से भी राज्य में क्रांति हो सकती है जो कि 2040 के नेट जीरो लक्ष्य को पूरा कर सकती है, जैसे पंजाब राज्य में कृषि-क्रांति हुई।

कार्यक्रम में कॉर्नेल विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. हेरोल्ड वैन ईएस द्वारा 'बिहार में मृदा स्वास्थ्य और कृषि' पर एक वार्ता और बिहार में फसल विविधता पर डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विष्वविद्यालय, पूसा के मुख्य वैज्ञानिक और प्रोफेसर डॉ रंजन लाइक ने प्रकाष डाला।

परामर्श में उपस्थित अन्य प्रमुख वक्ताओं और चर्चाकर्ताओं में सिकोइया क्लाइमेट फंड से सीमा पॉल, कृषि विभाग से डॉ अनिल झा और नरेंद्र मोहन, बोरलॉग इंस्टीच्यूट ऑफ साउथ एशिया केे डॉ राज कुमार जाट, बीएआईएफ से डॉ जयन्त खडसे और अमूल डेयरी से धर्मेंद्र श्रीवास्तव शामिल थे। कार्यशाला में मौजूद कुछ अन्य संगठन सीआइएमएमवाईटी, प्रदान, बीआरएलपीएस, डिजिटल ग्रीन, ईडीएफ, डब्ल्यूआरआइ, बीएसपीसीबी, आइसीएआर-आरसीईआर और आइएमडी थे।

(अंजनी कुमार वर्मा)